फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 153 मार्च 2001

चौकीदार : "**एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** में नौकरी करता था। 1999 में वी आर एस के फेर में आ गया। नौकरी छोड़ने पर जो पैसे मिले थे वो खत्म हो गये। अब एक फैक्ट्री में चौकीदारा करता हूँ। लड़की की शादी 25 फरवरी को है। एक बोझ उतार दूँगा पर भूखमरी का भूत मेरे चिपट जायेगा। सरकार वी आर एस को मँजूरी क्यों दे रही है ? अँधी है क्या ?"

नेकी कर और कूये में डाल

हिसाबों वाले सिक्कों के दूसरे पहलू अंकुश हैं। बही- खाते नुमा हिसाबों के अटूट लँगोटिये असहनीय पीड़ादायक परस्पर रिश्ते- सम्बन्ध हैं। मनुष्यों के बीच इन्सानी रिश्तों के अभाव- अकाल अन्य जीवों के प्रति अत्यन्त छिछली भक्षण- मनोरंजन वाली जुगलबन्दी लिये हैं। और, निर्जीवों के प्रति हिसाबों- कैलक्युलेशन्स वाली दृष्टियाँ उपयोग- इस्तेमाल- यूज में सिमटी- सिकुड़ी रहती हैं।

किसी को इस्तेमाल करना- किसी द्वारा इस्तेमाल हो जाना की ऊहापोह से निकलने के लिये, किसी का फायदा उठाना- किसी द्वारा फायदा उठा लिया जाना के संकीर्ण- संकुचित- पीड़ादायक जिन्दा लाशों वाले जीवन- वृत से बाहर निकलने के लिये "नेकी कर और भूल जा" एक सहज- सरल- आसान प्रस्थान- बिन्दू लगता है। 'हिसाबों- अंकुशों से पार' वाली चर्चा की यह दूसरी कड़ी है।

क्या है बदी ?

"आज भलाई का जमाना नहीं है" — यह अक्सर सुनने को मिलता है। और, नेकी- भलाई- अच्छाई की जो बातें की जाती हैं उनमें अधिकतर ऐसी हैं जो शैतानों के उस्ताद इबलिस की झोली की हैं :

— नौकरी लगवाई अथवा पैसे कमाना सिखाया

— वक्त पर उधार दिया, ब्याज पर अथवा बिना ब्याज के

— झगड़े में परिवार- मोहल्ला- थाना- कचहरी में पक्ष लिया

— खरीद- बिक्री में फायदा करवाया

— तरक्की में सहायता की

आमतौर पर यह सब तवे से चूल्हे में और चूल्हे से तवे पर भुनने- भुँजने- जलने में सहयोग देना है, मदद करना है इसलिये बदी है। "मर्ज बढता गया ज्यों- ज्यों दवा की" को इश्क के दायरे से बाहर देखते हैं तो सँसार में बढता जा रहा दुख- दर्द स्पष्ट प्रमाण है बुरे को अच्छा- भला- नेक कहने और इसे प्रचारित- प्रसारित करने में सहायक बनने का।

किसी को निन्यानवे के फेर में डालना बदी है। सिर- माथों पर चढने में सहायता करना बुरा है। होड़- प्रतियोगिता में मदद, पछाड़ने के लिये कन्धा देना बदी है। नौकरी- चाकरी को स्वीकार्य बनाने में सहायक बनना शैतानियत है। बच्चों को चालाक, तेज- तर्रार बनाने के लिये उनकी- अपनी दुर्गत करना.....

क्या है याद रखना ?

याद रखना बदी का चरित्र है। कहावत है : "तेरी- मेरी कब बिगड़ेगी ? जब हिसाब लगेंगे !"

किस ने कब क्या दिया अथवा किया को याद रखा जाता है। यह दोस्तों, परिवार, नाते- रिश्तेदारों, पड़ोसियों, सहकर्मियों को — बल्कि "सब" (देश, धर्म आदि) को — शिकंजे में जकड़े होता है। उपरोक्त में हम शैतान वाली "अच्छाई- भलाई" वाली बातें ही ले रहे हैं, शैतान वाली बुराई व बदला लेने का चित्रण तो फिल्मों के वीभत्स सीन भी बमुश्किल कर पाते हैं।

आमतौर पर तवे से चूल्हे वाले "अच्छाई" वाले हिसाब चुकाये जाते हैं पर यह अक्सर होता है कि हिसाब मेल नहीं खाते। ऐसे में, उसके लिये "इतना" किया और उसने बदले में "कुछ" नहीं किया के विलाप समवेत स्वर धारण कर लेते हैं : "जिसकी भी भलाई की उसी ने बुरा किया।"

प्रभु में विश्वास रखने के बदले परीक्षा में सफलता का सौदा बच्चों तक सीमित नहीं है। जप- तप, विश्वास, पूजा- अर्चना, जागरण, रोजे इहलोक की धन- सम्पदा- प्रतिष्ठा की मन्नत के संग मृत्यु उपरान्त जन्नत का तकाजा लिये होते हैं।

और, क्या है भूल जाना ?

अन्य के साथ की तो कहना ही क्या, अपने स्वयं के साथ हिसाब रखना प्रत्येक को छलनी कर रहा है। निकटजनों के प्रियजन बनने की राहों में हिसाब रखना- याद रखना की धारदार- काँटेदार बाड़ें हैं। आज के बही- खाते नुमा माहौल में बहुत कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव- सा है कोई हिसाब नहीं रखना, भूल जाना। ऐसे में मुर्गी पहले कि अण्डा नुमा चक्रव्यूह से पार पाने के लिये सामान्य तौर पर दैनिक जीवन में जो बिना हिसाब वाले रिश्ते हैं उनको बढाने से आरम्भ करना बनता है। आसान हैं और कई तथा विभिन्न प्रकार के हैं हमारे "स्वार्थहीन" सम्बन्ध।

कहते हैं कि दुख को भूलने की क्षमता पगलाने पर रोक लिये है। 'नेकी कर और भूल जा' इन्सानी सम्बन्धों का आधार है, मानवीय समाज की रचना की क्षमता लिये है।

और, क्या है नेकी ?

यह सीधी- सपाट बयानी हमें "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" की चौखट से पार जाने के लिये नेकी के मर्म तक, नेकी के सार तक ले आती है।

भूखे को भोजन देना, भिखमँगे को भीख देना, गरीब की- लाचार की मदद करना, चोट पर मरहम लगाना अच्छी बातें हैं। लेकिन आइये पूछते हैं कि लोग भूखे क्यों हैं ? लोग लाचार क्यों हैं ? ऐसे प्रश्न बीमारी की पहचान की राह इंगित करते हैं, नेकी के निर्माण की ईंट- गारा दर्शाते हैं।

अतः लाचार की सहायता और लाचारी को समाप्त करने की राह पर कदम नेकी है। परिभाषा से आगे बढने के लिये इस पर व्यापक चर्चायें आवश्यक हैं।(जारी)

और बातें यह भी

भारत कारपेट्स मजदूर : "बीस साल से ऊपर हो गये कम्पनी बन्द हुये और आज तक हमें हिसाब नहीं मिला है। मैनेजमेन्ट सौ पैर वाले कीड़े की तरह होती है। मैनेजमेन्ट, नेता, सरकार, कचहरी सब आपस में मिले हुये हैं। मजदूरों के किसी काम के नहीं हैं यह।"

मैटल बॉक्स वरकर : "इस उम्मीद से 13 साल से सड़कों की खाक छानते फिर रहे हैं कि फैक्ट्री खुल ही जायेगी और और मारे- मारे फिर रहे हम मैटल बॉक्स मजदूर फिर नौकरी पर चढ जायेंगे। लेकिन न तो कम्पनी खुल ही रही और न ही हमारा हिसाब दिया जा रहा। मन्त्री- अफसर- लीडर सब मजदूरों को खाने के लिये ही बने हैं क्या ? हमारा अपना इनमें कोई नहीं है।"

कटलर हैमर मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने वर्दी

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

एस्कोर्ट्स मजदूर : " फस्ट प्लान्ट के सीनियर मैनेजर मिश्रा को फार्मट्रैक प्लान्ट में डी जी एम (डिप्टी जनरल मैनेजर) बना कर बी पी आर (बिजनेस प्रोसेस रीइंजिनियरिंग) पर अमल का जिम्मा दिया गया। बी पी आर लागू करवाने, उत्पादन आसमान पर पहुँचाने के लिये डी जी एम मिश्रा पूरे दिन प्लान्ट में शॉपफ्लोर पर घूमने लगा। इस साहब ने हमें डरा-डरा कर, धमका-धमका कर वर्क लोड में भारी वृद्धि की। पाँच-छह मैनेजरों को ले कर डी जी एम मिश्रा मशीनों पर पहुँच जाता और मैनेजरों के साथ खुद रगड़-रगड़ कर मशीनों की सफाई में जुट जाता तथा हमें कहता कि मशीनें ऐसे साफ रखा करो! बी पी आर थोप चुकने के बाद मैनेजमेन्ट ने इधर दो-तीन महीनों से डी जी एम मिश्रा को एक कोने में धकेल दिया है और थर्ड प्लान्ट से शैलेन्द्र अग्रवाल को ला कर फार्मट्रैक का जनरल मैनेजर बना दिया है। नया जी एम हर वरकर की पीठ थपथपाता घूम रहा है और हर एक को कहता है कि वह सबसे अच्छा वरकर है!"

झालानी टूल्स वरकर : " कम्पनी वाइन्ड-अप करने के बी.आई.एफ.आर. के आदेश के खिलाफ मैनेजमेन्ट ने ए.ए.आई.एफ.आर. में अपील की है। वहाँ 16 फरवरी को तारीख थी। हम लोगों को आश्चर्य हुआ जब फरीदाबाद प्लान्टों का पुराना जनरल मैनेजर गोयल वहाँ दिखाई दिया। 1996 में मैनेजमेन्ट द्वारा 6 महीने तनखायें नहीं दिये जाने पर जनरल मैनेजर गोयल फस्ट प्लान्ट में मजदूरों से पिटा था। पूछने पर गोयल साहब ने बताया कि वकील ले कर आया है क्योंकि नौकरी छोड़े बरसों हो जाने के बाद भी कम्पनी ने उसका हिसाब नहीं दिया है।"

स्टाफ-स्टाफ-स्टा....

एस.पी.एल. डाइंग मजदूर : " मैनेजमेन्ट वरकरों को निकालती और भर्ती करती रहती है। लेकिन जिन मजदूरों से मशीनें चलवाती है उन्हें जल्दी-जल्दी निकालती नहीं है बल्कि उन्हें वरकर कहने की बजाय स्टाफ कहने लग जाती है। हमारे सैक्शन में 25 लोग मशीनें आपरेट करते हैं, वे सब 'स्टाफ' हैं और बाकी 95 हैल्पर हैं! असल में एक जगह ज्यादा दिन काम करने वाले कम्पनी की पोलपट्टी तो जानने ही लगते हैं, आपस में वरकरों के तालमेल भी बढ़ जाते हैं। इसमें मैनेजमेन्ट को खतरा है। इसलिये 'स्टाफ' का लेबल क्योंकि प्रचार में है : ' स्टाफ में हूँ इसलिये मैनेजमेन्ट के विरोध में कुछ नहीं कर सकता।' "

क्लच आटो वरकर : " कम्पनी में हम 250-300 स्टाफ में हैं। दिसम्बर का वेतन मैनेजमेन्ट ने स्टाफ को 28-29 जनवरी को जा कर दिया। जनवरी की तनखा आज 15 फरवरी तक हमें नहीं दी है — कब देगी भरोसा नहीं।"

खतों से –

तुम्हारी हैवानियत और निष्ठुरता
बन जायेंगी काल का निवाला
तुम भी नहीं बच सकोगे
बच जायेंगी काली करतूतों की तिथियाँ
आने वाला कल सदियों तक
अपशब्दों की मार मारता रहेगा
अपने को पहचानो
जिओ और जीने दो
हँसो और हँसने दो
प्रेम लो प्रेम दो
अग्निपथ और मृत्युपथ का
अन्तिम शब्द है यही।

— वृजेन्द्र सिंह वैरागी, सागरपाली, बलिया

भूकम्प पीड़ितों एवं आपदा पीड़ितों पर रेल प्रशासन कितना हृदयहीन है इसे सोचा नहीं जा सकता। सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय से मेरे वेतन से मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय इलाहाबाद द्वारा एक रुपया प्रतिमाह की कटौती राष्ट्रीय रक्षा कोष हेतु मेरे अनुरोध पर की जाती थी। यह कटौती दिसम्बर 1977 तक जारी रही। उसके बाद प्रशासन ने अपने आप बिना कारण अवगत कराये बन्द कर दिया। मौखिक रूप से कहा गया : एक व्यक्ति हेतु अनावश्यक रूप से विवरणी बनानी पड़ती है, इतर काज करना पड़ता है। विडम्बना है कि रेल प्रशासन यदि किसी को तैयार न कर सके तो दूसरे को भी रोक देने का कुकृत्य करता है।

..... उत्तरकाशी के भूकम्प पीड़ितों, महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों एवं आन्ध्र प्रदेश के तूफान पीड़ितों हेतु मैंने अपने विभिन्न अवशेषों से कटौती करने का अनुरोध-पत्र यथा समय दिया। ... 250 से अधिक रेल कार्मिकों ने आवेदन-पत्र दिये कि उनके अवशेषों से कटौती की जाय। मंत्रियों को पत्र भेजे, रेल की खुली अदालत में आवेदन-पत्र दिया। अभी तक आपदा पीड़ितों के लिये कटौती नहीं की गई है।

— विद्याधर, इलाहाबाद

क्यों न जहां का ग़म अपना लें
बाद में सब तदबीरें सोचें
बाद में सुख के सपने देखें
सपनों की ताबीरें सोचें।

— चन्द्र मौलेश्वर, अलवाल, आन्ध्र प्रदेश

ऐय्याशी अब
सड़ान्ध मारेगी
हक छीनने वालों की
प्रकृति ही आतें फाड़ेगी
सुधर न पाये
कुछ दिन और
तो आइसक्रीम, बर्गर के
अटक जायेंगे कौर।
भूख प्यास से
तड़प रहे लोगों को
संत्रास न देना
बोरों में भरे नोटों की गड्डी के
चाबो भले चबेना।

— प्रदीप गौतम सुमन, रीवा

धूर्तों के पार्टीतंत्र (डेमोक्रेसी) को खत्म कर ऋषियों द्वारा प्रणीत गणराज व्यवस्था बनाने पर विचार हेतु 17, 18, 19 मार्च 2001 को रतलाम में लोकतंत्र विनाशाय यज्ञ (सम्मिलन) आयोजित है।

— मदन मोहन, अपना राज आन्दोलन, अजन्ता रोड, रतलाम —457001

और बातें यह भी

(पेज एक का शेष)

नहीं दी है और नोटिस लगाया है कि वर्दी नहीं पहन कर आने पर एक्शन लेगी। लीडर कहते हैं कि फटी-पुरानी वर्दी पहन कर आओ।"

हिन्दुस्तान वायर वरकर : " छँटनी करनी थी। इसलिये मैनेजमेन्ट ने 'उम्र के बारे में शंका है, सबूत प्रस्तुत करो' के पत्र 150 मजदूरों को दिये। फिर 'सही सबूत नहीं दिया' कह कर मैनेजमेन्ट ने 50 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया है।"

हिन्दुस्तान सीरिंज वरकर : "25 सैक्टर प्लान्ट में 1300 मजदूर काम करते हैं पर इनमें परमानेन्ट 300 ही हैं।"

दिल्ली आटोमोबाइल्स मजदूर : " कम्पनी बन्द हुये दो साल से ऊपर हो गये। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को तीन महीनों की तनखायें अब तक नहीं दी हैं और 4 साल के प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे भी जमा नहीं किये हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

रफ्तार जानलेवा है

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2001 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून हैं – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 1914 रुपये 86 पैसे, अर्ध-कुशल (क) को 1964 रुपये 86 पैसे, अर्ध-कुशल (ख) को 1989 रुपये 86 पैसे, उच्च कुशल मजदूर को 2114 रुपये 86 पैसे कम से कम; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर, आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना, तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड, मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना, हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई.; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट-कैजुअल-ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान, बराबर वेतन; ● ....

बेलमोन्ट रबड़ वरकर : "40 परमानेन्ट और 40 कैजुअल वरकर हैं। कैजुअलों को 1300 रुपये वेतन देते हैं, ई.एस.आई. कार्ड नहीं और फण्ड की पर्ची नहीं। दसियों साल से काम कर रहे परमानेन्टों को तरक्की-वरक्की सब मिला कर सरकारी न्यूनतम वेतन ही देते हैं।"

एस्कोर्ट्स यामाहा मजदूर : "स्क्रैप विभाग में काम करते हम 5 वरकरों को जनवरी की तनखा 23 फरवरी तक नहीं दी गई तो हम ने कम्पनी अधिकारियों से शिकायत की। इस पर एक-दो दिन में पैसे देने का वादा किया लेकिन निभाया नहीं। जनवरी की तनखा 28 फरवरी को हम ने फिर माँगी तो भी हमें नहीं दी। आज, 1 मार्च को हम ड्युटी के लिये गये तो हमें फैक्ट्री में नहीं जाने दिया। इस पर हम ने एस्कोर्ट्स यामाहा के जनरल मैनेजर को तथा डी एल सी को जनवरी की तनखा और ड्युटी के लिये दरखास्त दी है।"

ट्राइटोन वरकर : "हैल्परों को 1200-1300 रुपये महीना देते हैं। ई.एस. आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. की पर्ची नहीं।"

इन्जेक्टो मजदूर : "दिसम्बर का वेतन 25 जनवरी को जा कर दिया। आज 15 फरवरी हो गई है पर जनवरी की तनखा नहीं दी है। इधर मैनेजमेन्ट ने ओवर टाइम काम की पेमेन्ट भी सिंगल रेट से कर दी है।"

लाल मिल वरकर : "ठेकेदारों के जरिये कम्पनी दो-ढाई सौ मजदूर रखती हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। दिहाड़ी 45 से 60 रुपये देते हैं।"

एजीको कन्ट्रोल मजदूर : "जनवरी का वेतन आज 17 फरवरी तक नहीं दिया है। वार्षिक बोनस तो कम्पनी देती ही नहीं।"

वर्कशॉप वरकर : "मैं बल्लभगढ में यूनियन लीडर की वर्कशॉप में काम करता था। मैंने वह नौकरी छोड़ दी क्योंकि तनखा देने में नेता बहुत लफड़ा करता था। नौकरी छोड़ने के बाद भी मेरी पौने दो महीने की तनखा नहीं दी है। लेबर डिपार्टमेन्ट में यूनियन लीडर केस करता रहता है। मैं वहाँ उसके खिलाफ शिकायत डालूँ क्या?"

इण्डिया फोर्ज मजदूर : "पाँच-छह छोटे-छोटे ठेकेदार हैं और मैनेजमेन्ट ने सब मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। न तो ई.एस.आई. कार्ड देते और न फण्ड की पर्ची। साप्ताहिक छुट्टी नहीं है। हैल्परों को महीने के 1100 रुपये देते हैं। आपरेटरों को मासिक वेतन नहीं है, पीस रेट से मुश्किल से 1800-1900 रुपये महीना बनता है। वेतन 15-16 तारीख को जा कर देते हैं।"

बेलमेक्स वरकर : "125 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 100 परमानेन्ट, 80-85 कैजुअल और 100-125 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर हैं। सब मजदूरों को हर रोज 4 घण्टे ओवर टाइम करना कम्पलसरी है, रविवार को भी काम करना पड़ता है। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से देते हैं। तीन-चार साल से लगातार काम कर रहे कैजुअल हैं और उन्हें 1200-1400 रुपये वेतन देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 1400-1500 रुपये देते हैं। परमानेन्टों को छोड़ कर किसी को ई. एस.आई. कार्ड और फण्ड की पर्ची नहीं दी है।"

अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर : "हम 8 फरवरी को जनवरी का वेतन माँगने मैनेजमेन्ट के पास गये तो कम्पनी ने पुलिस बुला ली। तब से हर समय पुलिस फैक्ट्री में बैठी रहती है। आज 13 फरवरी हो गई है पर मैनेजमेन्ट ने हमें जनवरी का वेतन नहीं दिया है।"

ओम प्रिसिजन टूल्स वरकर : "हैल्परों को 1100 रुपये महीना देते हैं और आपरेटरों को 1300-1400-1500 रुपये। दो-चार वरकरों को ही 1800-1900 रुपये महीना देते हैं।"

शक्ति इंजिनियरिंग मजदूर : "79 सैक्टर-6 में हम 60-70 वरकर हैं। हम में कोई परमानेन्ट नहीं है, ई.एस.आई. कार्ड किसी को नहीं दिया है। दिसम्बर का वेतन मैनेजमेन्ट ने 3 फरवरी को जा कर दिया। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से देते हैं।"

बरकत उद्योग वरकर : "हस्ताक्षर 2000 पर करवाते हैं लेकिन महिला मजदूरों को 1200 और पुरुष मजदूरों को 1400-1500 रुपये महीना देते हैं।"

ओमेगा ब्राइट स्टील मजदूर : "109 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकर रखने के लिये 100 रुपये महीना के हिसाब से रिश्वत लेते हैं, 6 महीने के 600 रुपये। कैजुअलों को 1700 रुपये महीना बताते हैं और इन 1700 में से ई.एस.आई व पी.एफ. के पैसे काटते हैं – हमारे हाथ में 1300-1400 रुपये महीना ही आते हैं। फैक्ट्री में 100 के लगभग कैजुअल रखते हैं।"

नूकेम वरकर : "सितम्बर व अक्टूबर का वेतन नूकेम मशीन टूल्स में हमें 8 फरवरी को जा कर दिया। नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी की हमारी तनखायें आज 19 फरवरी तक नहीं दी हैं। आठ-दस को मैनेजमेन्ट अलग से पैसे दे रही है ताकि मजदूर ही मजदूर को काटें। 1999 का बोनस, एल टी ए तथा शिक्षा भत्ता भी नहीं दिये हैं। पाँच महीनों के पैसे पहले ही खाये बैठी है।"

सुपर ऑयल सील मजदूर : "नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी का वेतन 7 फरवरी तक नहीं दिया तो 7 और 8 फरवरी को हम ने काम बन्द रखा। तनखा देना तो दूर रहा, मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया कि हड़ताल के लिये सजा के तौर पर हमारा 8 दिन का वेतन काटेगी। नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी का वेतन हमें आज 13 फरवरी तक नहीं दिया है।"

(बाकी पेज चार पर)

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट-बोल्ट होते हैं; नालियाँ-सीवर होते हैं; कई-कई ऑपरेशन होते हैं; रात-दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने-डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✶ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✶ कच्चा माल-तेल-बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी-दुगनी इस्तेमाल हो; ✶ ऑपरेशन उल्टे-पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✶ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख-मिचौनी करने मक्का-मदीना चली जाये; ✶ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच-विचार कर कदम उठाने चाहियें।

तानों-बानों की पहचान

नागपाल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "65 सैक्टर–6 में दो प्लान्टों में हम 140 परमानेन्ट वरकर थे। मैनेजमेन्ट ने दोनों प्लान्टों को एक कर दिया और फिर यूनियन बनवाई – पहले एच एम एस की तथा फिर इन्टक की। यूनियन से कम्पनी ने हड़ताल करवा दी और इन्टक लीडर ने पैसे खा कर 100 मजदूरों को निकलवा दिया।"

एस्कोर्ट्स जे सी बी वरकर : "हम ने आई. टी.आई. की हुई है। जे सी बी मैनेजमेन्ट ने हमें कैजुअल वरकर के तौर पर भर्ती कर रखा था और हम से आपरेटर व फिटर का काम करवाती थी। लेकिन पैसे हमें हैल्पर ग्रेड के देती थी। हम ने यूनियन लीडरों से शिकायत की तो उन्होंने हमें समर्थन का आश्वासन दे कर कदम उठाने को कहा। हम ने 79 रुपये प्रतिदिन की दिहाड़ी की जगह 105 रुपये दिहाड़ी माँगी जो कि कुशल मजदूर के लिये न्यूनतम वेतन है। यूनियन लीडरों के भरोसे हम ने मैनेजमेन्ट पर दबाव डालने के वास्ते काम बन्द कर दिया। इस पर जे सी बी मैनेजमेन्ट ने हम 200 कैजुअल वरकरों को नौकरी से निकाल दिया और यूनियन लीडर आँखें मूँदे रहे।"

कटलर हैमर मजदूर : "दो बार वी आर एस लगा कर मैनेजमेन्ट ने बहुत मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया है। हम लोग जो बचे हैं तो क्या खाक बचे हैं? हम पगला गये हैं इसलिये इतना ज्यादा काम करने लगे हैं कि मैनेजमेन्ट को फिर मजदूर फालतू दीखने लगे हैं। इसलिये निकालने का सिलसिला चलता रहेगा। इस जुगत में हम उत्पादन बढाने में जुटे हैं कि इस तरह नौकरी बचा लेंगे पर यह राह तो नौकरियाँ गँवाने की राह है। गुजरात में भूकम्प से हुई तबाही ने कटलर हैमर कम्पनी के लिये लिये आर्डरों की खान खोल दी है पर विनाश में चाँदी कूटना .. . भी चार दिन की चाँदनी ही है।"

इन्डो प्रिन्ट्स वरकर : "नये लीडरों पर लगाम लगाये रखने के लिये कम्पनी पुराने लीडरों को शह दे रही है। हम समझ रहे हैं। न तो नये लीडरों को और न पुराने लीडरों को हमें मूँडने में हम कोई मदद करेंगे। हमारी कोशिश है कि इन दोनों की नहीं चलने दें।"

इन्जेक्टो मजदूर : "आजकल लीडर मैनेजमेन्टों के नोटिस बोर्ड हैं। मैनेजमेन्टों को जो कहना होता है उसे लीडरों के जरिये कहती हैं। हर फैक्ट्री में उत्पादन बहुत थोप रखा है। हर जगह चमचे पालते हैं, उनको भी ध्यान में रखना पड़ता है। काम हमें पूरे का पूरा न निगल जाये इसलिये अपने को बचाना बहुत-ही जरूरी है और नौकरी को बचाने की बात भी है। इसलिये बहुत सोच कर कदम उठाने पड़ते हैं।"

आयशर ट्रैक्टर वरकर : "जोर-शोर की अफवाह फैलाई थी कि 35 करोड़ रुपये रिश्वत देने की बजाय आयशर कम्पनी फरीदाबाद छोड़ कर जा रही है। आतंक पैदा कर मैनेजमेन्ट ने जुलाई 2000 में वी आर एस लगाई और ट्रैक्टर प्लान्ट में 400 मजदूरों में से 125 मजदूरों की व 60 स्टाफ की तथा रिसर्च सेन्टर में 46 कर्मचारियों की नौकरियाँ खा गई। लेकिन उतने वरकरों व स्टाफ के लोगों ने नौकरी नहीं छोड़ी थी जितने मैनेजमेन्ट चाहती थी। इसलिये और लोगों को निकालने की जुगत **मैनेज़मेन्ट भिड़ाती रही है। इधर मैनेजमेन्ट ने फिर अव्वल श्रेणी की धूर्त चाल चली है : ट्रैक्टर प्लान्ट में एक स्टाफ वाले पर ऐंवे ही चोरी का आरोप लगा कर उसे सस्पैन्ड कर दिया है। 'किसी पर कुछ भी आरोप लगा सकती है' की यह धूर्त चाल नया आतंक पैदा कर और 50 मजदूरों तथा 65 स्टाफ वालों की नौकरियाँ खाने के लिये चली गई है।**"

झूठ की सीमा नहीं

झालानी टूल्स मजदूर : "चार साल पहले रिटायर हुये लोगों को अभी तक हिसाब नहीं दिया है और हमारी 30 महीनों की तनखायें नहीं दी हैं। फिर भी, 16 फरवरी को ए.ए.आई.एफ. आर. की बेन्च के सम्मुख मैनेजमेन्ट के वकील ने कहा कि मजदूरों को समय पर वेतन दिया जा रहा है तथा रिटायर हुओं को हिसाब दिया जा रहा है। और... और मैनेजमेन्ट के वकील के सुर में सुर मिला कर यूनियन के वकील एडवोकेट आर.डी. मखीजा ने कहा कि फरीदाबाद प्लान्टों में मजदूरों को रेगुलर पेमेन्ट मिल रही है और वरकरों को कोई प्रोब्लम नहीं है।

"आदेश अनुसार मैनेजमेन्ट ने दो हजार रुपये की एड हॉक पेमेन्ट अधिकतर मजदूरों को नहीं दी पर शपथ-पत्र दाखिल किया कि उसने आदेश का पालन कर दिया है। पोलपट्टी खोलने पर फिर आदेश दिया गया कि दिल्ली हैड आफिस में 20 फरवरी से 28 फरवरी तक दो हजार रुपये की एड हॉक पेमेन्ट दी जाये और वे रिटायर मजदूर भी हकदार होंगे जिन्हें हिसाब नहीं दिया है। मैनेजमेन्ट ने दिल्ली में किसी वरकर को दो हजार रुपये नहीं दिये – आखिरी दिन लिख कर दिया कि पैसे नहीं हैं। और.... और रिटायर वरकरों को दो हजार रुपये देने के लिखित आदेश के बावजूद मैनेजमेन्ट बोली कि यह आदेश है ही नहीं!

"रिटायरमेन्ट पत्र में मैनेजमेन्ट लिखती है कि अपना हिसाब बनवा लें और हिसाब ले लें। लेकिन....लेकिन हिसाब देना तो दूर रहा, मैनेजमेन्ट हिसाब बना कर ही नहीं देती। हाँ, इधर एक मजदूर, श्री मवासी राम का हिसाब बाकायदा बना कर दिया है : 33 साल की नौकरी के बाद फुल एण्ड फाइनल निल!

"14 साल से बीमार कम्पनी को स्वस्थ करने के नाम पर फरीदाबाद प्लान्टों के मजदूरों के ही 70-72 करोड़ रुपयों पर कुण्डली मारे बैठी मैनेजमेन्ट उनमें से दो-तिहाई हड़प चुकी है। मजदूरों के बाकी बचे एक-तिहाई को हड़पने के लिये मैनेजमेन्ट ने कम्पनी को स्वस्थ करने की एक और योजना पेश की है। ठुकराई जा चुकी जून 2000 वाली योजना में किसी अमरीकी कम्पनी द्वारा 25 करोड़ रुपये झालानी टूल्स में लगाने का शगूफा था पर इस बार कहीं से भी, किसी भी फाइनैन्सर द्वारा एक पैसा तक लगाने का जिक्र नहीं है। मैनेजमेन्ट के अनुसार कम्पनी की कुल सम्पत्ति 41 करोड़ रुपये की है और बेचने पर 20 करोड़ रुपये में जायेगी। लेकिन अब पेश योजना कहती है कि कम्पनी चलाने के लिये कम्पनी की कुछ सम्पत्ति बेची जायेगी और...और आन्तरिक स्रोतों से 45 करोड़ रुपयों का प्रबन्ध हो जायेगा! इस बार के असल फाइनैन्सर मजदूर बनेंगे और जो मजदूर नहीं चेतेंगे उनके 1994 से पहले के प्रोविडेन्ट फण्ड में जमा पैसों को कम्पनी में लगवा कर मैनेजमेन्ट उन्हें भी हड़प जायेगी। यह बात तो खैर है ही कि 1994 से मैनेजमेन्ट ने हमारे पी.एफ. के पैसे जमा ही नहीं करवाये हैं।"

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की ... (पेज तीन का शेष)

हाईटेक वरकर : "18 दिसम्बर को मैनेजमेन्ट ने हम 7 मजदूरों को बिना कोई कारण बताये नौकरी से निकाल दिया। हमें निकाले 3 महीने हो गये हैं पर नवम्बर माह का और दिसम्बर के 18 दिन का वेतन आज 15 फरवरी तक हमें नहीं दिया है।"

विक्टोरा टूल्स वरकर : "350 में से 45 ही परमानेन्ट हैं। हर रोज 12-14 घण्टे काम करना अनिवार्य बना रखा है – रविवार को भी 8 घण्टे काम करवाते हैं। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं और फैक्ट्री में 20-25 वरकर तो अब भी ऐसे हैं जिनके हाथ कटे हैं। एक्सीडेन्ट के समय मैनेजमेन्ट परमानेन्ट करने का भरोसा दे देती है और 2-3 महीने फण्ड काटती है तथा पे-स्लिप देती है पर फिर बन्द कर देती है। हम 300 को मैनेजमेन्ट बोनस नहीं देती और फण्ड की पर्ची भी नहीं।"

एस्कोर्ट्स यामाहा मजदूर : "रिजेक्शन स्टोर में मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार के जरिये वरकर रखे हैं। हर वरकर को ब्रेक की धमकी दे कर हर महीने कम्पनी का साहब रिश्वत लेता है। साहब कह देता है कि पैसे दो नहीं तो कल से ड्युटी मत आना। अपनी मजबूरी के कारण हम पैसे दे देते हैं। कम्पनी का काम तो हमें करना ही पड़ता है, परमानेन्ट करवाने का लालच दे कर साहब रोज अपनी गाड़ी साफ करवाता है और घर ले जा कर कपड़े भी धुलवाता है। बरसों यह करवा कर साहब नये बन्दे भर्ती कर पुरानों को निकाल देता है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए
जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।